A News Letter of Sanskriti University

प्रतिबिम्ब

Volume:- 1 July 2020

उच्च शिक्षा के लिए संस्कृति विवि कर रहा बड़े बदलाव

कोराना से उपजी चुनौतियों का डटकर कर रहे सामना:सचिन गुप्ता

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय वर्तमान दौर में उन्नत उच्च शिक्षा देने के लिए अनेक आधुनिक माध्यमों,साधनों का उपयोग कर रहा है। ये बदलाव कक्षाओं को आनलाइन आयोजित करने के लिए, विद्यार्थियों को सुविधानुसार विषय संबंधी लेक्चर सुनने के लिए, पढ़ाई को सीधे रोजगार के अवसरों से जोड़ने के लिए, विद्यार्थियों को उद्दयमी बनाने के लिए युद्धस्तर पर किए गए हैं। संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ने एक बयान में उक्त जानकारी देते हुए कहा कि 2016 में हमने संस्कृति विवि की स्थापना की है। हमें आज अपनी टीम के प्रयासों से इस बात को लेकर संतोष है कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हम कभी यह नहीं कहते कि हमारी ही युनिवर्सिटी सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन हमारी यह सोच जरूर है कि हमारे विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा का ऐसा सेटअप हो जो छात्रों को कहीं नहीं मिले। हमारे यहां लगभग 50 कोर्सेज हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चाहते हैं कि हमारा देश आत्मनिर्भर बने। हमारी कोशिश भी यही है कि बच्चे अपना रोजगार खड़ा करें। इसके लिए हमने अपने यहां इंटरप्रिन्योरशिप सेल भी बनाया है। हमारे यहां स्टार्टअप, डिजायन सेंटर और इन्क्युबेशन सेंटर है, जो आसपास कहीं नहीं है। इसके माध्यम से छात्र अपने प्रोजेक्ट को मूर्त रूप दे सकते हैं। हमारी कोशिश है कि बच्चे रोजगार स्वयं का खड़ा करें और अन्य लोगों को रोजगार दे सकें। इसके लिए विश्वविद्यालय स्तर से भी

संस्कृति विश्वविद्यालय के चेयरमैन सचिन गुप्ता

विद्यार्थियों को फंडिंग करने का निर्णय लिया है। हमने विश्व के नामी-गिरामी विवि से एमओयू किए हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान और कौशल की विश्वस्तरीय शिक्षा विद्यार्थी हासिल कर सकें। हमारे यहां क्वालिटी बेस शिक्षा देने के लिए हर साधन और सहयोग लिए जा रहे हैं। उन्होंने जारी अपने बयान में कहा है कि विद्यार्थी जब अपनी पढ़ाई 50 प्रतिशत पूरा करे तभी उसके हाथ में रोजगार के अवसर हों। कोर्स पूरा करे तो उसके हाथ में नौकरी के दो अवसर हों। इसके लिए हमने अपग्रेड कंपनी से टाईअप किया है। हमारे विवि के बी.टेक और एमबीए के बच्चों के पास कम से कम नौकरी के लिए इंटरव्यू के पांच और 10 मौके होंगे। हम चाहते हैं कि अभिभावक इस बात को लेकर पूर्ण रूप से संतुष्ट हों कि उन्होंने जो बच्चे की पढ़ाई पर खर्च किया है वह व्यर्थ नहीं गया है। वे ये महसूस करें कि जब बच्चे ने यहां प्रवेश लिया था और जब उसने पढ़ाई पूरी की तो उसमें कितना बड़ा सकारात्मक बदलाव आया है। कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने अपने बयान में जनकारी देते हुए बताया है कि हमारे यहां सात से आठ देशों के छात्र पढ़ने आते हैं। अभी हमने विश्व के 20 देशों की बड़ी युनिवर्सिटी से टाईअप किया है, जिसमें अमेरिका, रूस, मलेशिया, फिलीपींस देश शामिल हैं। अलग-अलग टापिक पर इनसे टाईअप हुआ है। हमारे यहां के बच्चे वहां पढ़ने जा सकेंगे, हमारी और उनकी फैकल्टी का आदान-प्रदान होगा। कुल मिलाकर सोच यह है कि हमारे यहां के विद्यार्थियों का ग्लोबल एक्सपोजर हो, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान और कौशल हासिल करने के अवसर मिलेंगे। कोराना महामारी उच्च शिक्षा के लिए भी चुनौती बनी हुई है। हमारे विश्वविद्यालय ने इस चुनौती को स्वीकार किया है। हमने आन लाइन एक्जाम कराए हैं, जिनमें 97 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भाग लिया। हमने बच्चों की आनलान क्लासेज के लिए अपग्रेड का स्वदेशी प्लेटफार्म हायर किया है। इसके माध्यम से बहुत तेज गति से सभी आन लाइन क्रियाओं को बहुत तेजी से इस्तेमाल किया जा सकता है। सारे लेक्चर रिकार्डेड रहेंगे बच्चे इसको अपनी सुविधा के अनुसार सुन सकता है। हर स्तर कि रिपोर्ट बनाई जा सकेगी। बच्चों से फैकल्टी सीधे इंटरेक्ट कर सकेंगी। बच्चे अपनी समस्याओं को फैकल्टी से सीधे इंटरेक्ट कर हल कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि संस्कृति विवि जिस सोच और मूल्यों को लेकर स्थापित किया गया है, उनमें से एक महत्वपूर्ण सोच यह है कि हम हमेशा यह सोचते हैं कि समाज के साथ हर मुसीबत में खड़ा होना हमारा दायित्व है। हमारे परिवार विशेषकर मेरे पिता के दिल्ली में टेक्निया के नाम से अनेक शिक्षण संस्थान हैं। हमारे हर शिक्षण संस्थान के साथ एक दिव्यांग स्कूल भी है। इन स्कूलों में दिव्यांग बच्चों को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए तैयार किया जाता है। इनकी शिक्षा, भरण-पोषण, मनोरंजन, भोजन, स्कूल तक लाना-ले जाना यह सभी हमारे शिक्षण संस्थान अपने खर्चे पर करते हैं। संस्कृति विवि भी दिव्यांग स्कूल चलाता है। इसके अलावा जब कोराना महामारी शुरू हुई तो संस्कृति आयुर्वेद और यूनानी कालेज के चिकित्सकों ने गरीबों, मजदूरों में जाकर स्वच्छता और सावधानियों को लेकर जनजागरूकता अभियान चलाया। लोगों को मास्क और काढ़ा वितरित किया। विश्वविद्यालय ने राजमार्ग से गुजरने वाले विस्थापित मजदूरों को भोजन, स्वच्छ पेय जल भी वितरित किया। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री सहायता कोष में सभी शिक्षकों, कर्मचारियों की ओर से विवि प्रशासन की ओर से सहयोग किया। प्रशासन की अपील पर आगे बढ़ कर 300 बेड का चिकित्सालय दिया, जिसे प्रशासन ने एल-वन सेंटर बनाया। जहां से आज भी मरीज ठीक होकर घर जा रहे हैं। उनको विवि की ओर से काढ़ा भी बांटा जा रहा है।

★ ★ ★

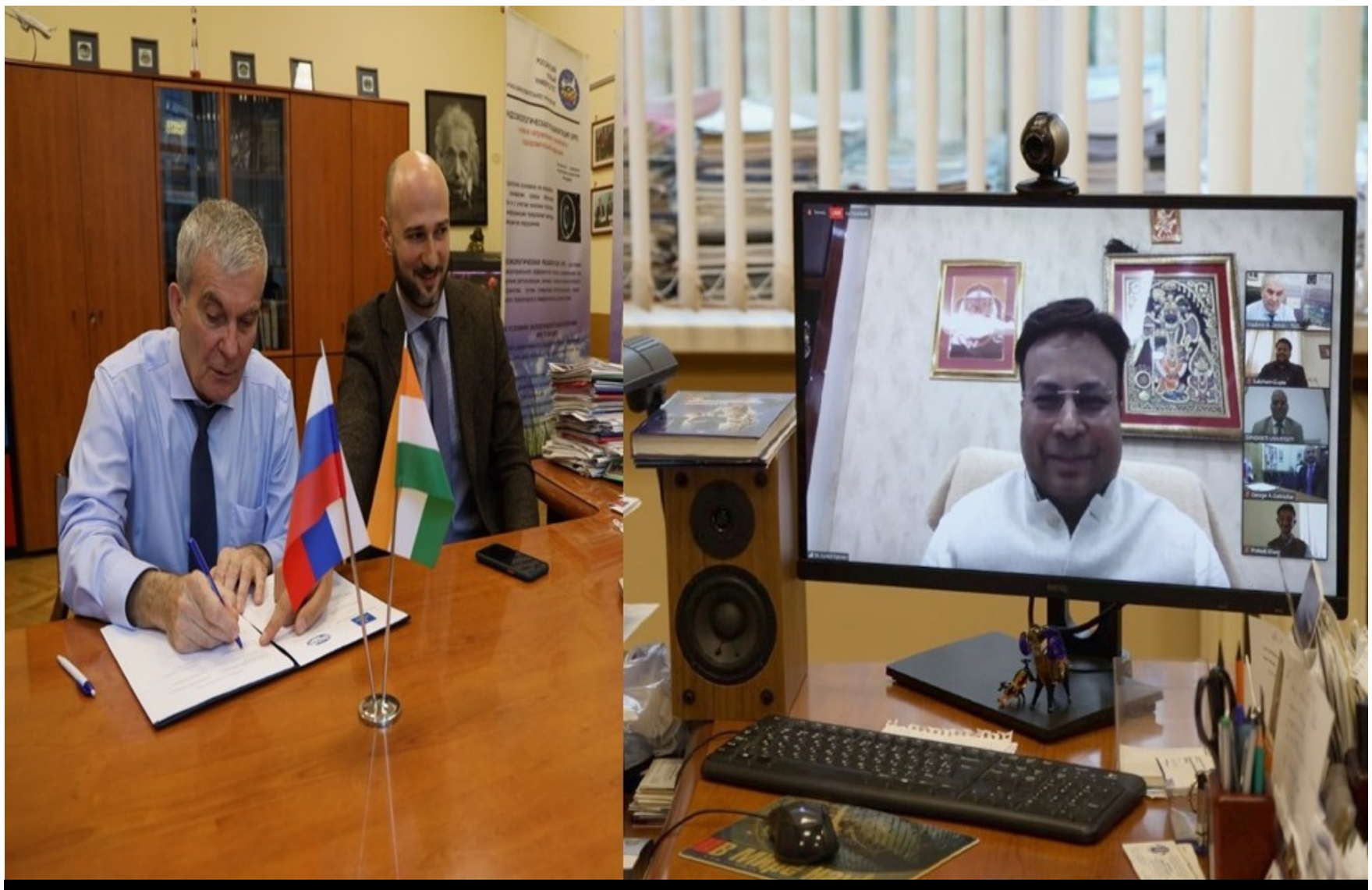

संस्कृति विवि और रूस के रोसनाऊ विवि के बीच आन लाइन एमओयू को अंतिम रूप देते संस्कृति विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता व रोसनाऊ विवि के अधिकारी।

संस्कृति विवि और रोसनाउ विवि रूस के बीच एमओयू हुआ साइन

संस्कृति विवि ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ाया एक और कदम

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के कौशल विकास और विश्वस्तरीय शैक्षणिक उन्नयन के लिए एक और ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। रूस के प्रतिष्ठित रोसनाउ विश्वविद्यालय से संस्कृति विश्वविद्यालय ने एमओयू (मेमोरेंडम आफ अंडरस्टेडिंग) पर हस्ताक्षर कर विश्वविद्यालय के अकादमिक, रिसर्च, इनोवेशन, उद्यमिता, गुणवत्ता प्रबंधन, कोर्स डवलपमेंट, स्टूडेंट एक्सचेंज, फैकल्टी एक्सचेंज इत्यादि क्षेत्रों में उत्कृष्टता के नए मानक स्थापित करने के लिए अपनी वचनबद्धता को नया आयाम दिया है। ज्ञात हो कि रोसनाउ विवि रूस के अग्रिम १00 विश्वविद्यालयों में पिछले ९ वर्षो से अपना स्थान बनाने के साथ ही इसी वर्ष इसे वर्ष के सर्वश्रेष्ठ निजी विश्वविद्यालय के रूप में भी आँका गया है। इस द्विपक्षीय एमओयू पर हस्ताक्षर संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने किए एवं रोसनाउ विश्वविद्यालय रूस के रेक्टर व्लादिमीर ए जेर्नोव ने समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। खास बात यह रही कि यह पहली बार हुआ की दोनों पक्ष के विश्वविद्यालय ने ऑनलाइन जूम प्लेटफार्म का इस्तेमाल कर एमओयू पर हस्ताक्षर किये, जिसमे दोनों विश्वविद्यालय के उच्च पदस्थ अधिकारीगण मौजूद थे। इस अवसर पर रोसनाउ विश्वविद्यालय के अन्तर राष्ट्रीय मामलों के निदेशक जश्वर्ज गाब्रिलिओन, संस्कृत विश्वविद्याला के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर प्रोफेसर पी सी छाबड़ा, सक्षम गुप्ता, प्रतीक खरे इत्यादि मौजूद थे। इस एमओयू से छात्रों को कई उच्च स्तरीय ज्ञान, कौशल एवं तजुर्बे प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय फैकल्टी सदस्यों से ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो सकता है। छात्र एवं छात्राएं शोध एवं नवाचार के लिए आसानी से विदेश भी जा सकते है ताकि वे अपने शोध एवं इनोवेशन संबधित कार्यो को द्रुत गति से निष्पादित कर सकें। छात्र कई विदेशी शिक्षकों से शोध सम्बन्धी कार्यों में विदेशी प्रसिद्ध शिक्षकों से मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकेंगे। इस अवसर पर कुलाधिपति श्री सचिन गुप्ता जी ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा की वे एम ओ यू में उल्लिखित तथ्यों को मूर्त रूप में होते हुए देखना चाहेंगे ताकि एमओयू की सार्थकता एवं प्रासंगिकता स्थापित हो सके। उन्होंने यह भी कहा की भारत और रूस के बीच पुराने सम्बन्ध काफी प्रगाढ़ रहे हैं और सभ्यता और संस्कृति के उद्भव के दौरान दोनों देशों के बीच मैत्री एवं परस्पर सहयोग बना रहा है। हम लोग उच्च शिक्षा, रिसर्च, नवाचार इत्यादि क्षेत्रों में परस्पर सहयोग कर इस एमओयू की लिखित मंशाओं को फलीभूत करने का पूरा प्रयास करेंगे। कुलपति डॉ राणा सिंह ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालयों से एमओयू करने से विश्वविद्यालय के अकादमिक, शोध, नवाचार, उद्यमिता, गुणवत्ता प्रबंधन, पाठ्यक्रम उन्नयन, छात्र विनिमय, संकाय सदस्य विनिमय इत्यादि क्षेत्रों में उत्कृष्टता के नए मानक स्थापित करने की प्रक्रिया को बहुआयामी गति एवं ऊर्जा मिलेगी।

★ ★ ★ ★ ★ ★

Ranked 1st TOURISM & HOSPITALITY in Private Colleges, UP By INDIA TODAY Best Colleges Ranking 2020
Ranked 5th MANAGEMENT & COMMERCE in Private Colleges, in UP By INDIA TODAY Best Colleges Ranking 2020
Ranked 5th in all-India "Best Infrastructure Category" by OUTLOOK
Ranked 6th ENGINEERING & INFORMATION TECHNOLOGY in Private Colleges, in UP By INDIA TODAY Best Colleges Ranking 2020
Ranked Among TOP 15 Universities in India by INDIA TODAY ASPIRE
Ranked Among TOP 20 Private Universities in India by OUTLOOK

संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को मोबिलाइट टेक्नोलॉजी में मिली नौकरी

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को दिल्ली स्थिति प्रतिष्ठित कंपनी मोबालाइट टेक्नोलॉजी में बड़ी संख्या में नौकरी मिली है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोराना महामारी के चलते देश में पैदा हुए रोजगार संकट के दौरान विद्यार्थियों की इस सफलता पर हर्ष व्यक्त करते हुए उनकी मेहनत, पढ़ाई के प्रति गंभीरता और लगन की सराहना की है। मोबिलाइट टेक्नोलाजी की एचआर हेड लक्ष्य जया ने बताया कि मोबिलाइट टेक्नोलाजी एक प्रतिष्ठित साफ्टवेयर कंपनी है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बीओटीएस, मोबाइल और वेब डवलपमेंट के लिए काम करती है। उन्होंने बताया कि संस्कृति विवि के छात्र-छात्राओं का चयन एक निर्धारित योग्यतापरक चयन प्रक्रिया के तहत हुआ। विवि के विद्यार्थियों ने अपनी योग्यता परिचय देकर इंटरव्यू क्वालीफाई किया है। इन सभी बच्चों को आफर लैटर दिये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि संस्कृति विवि के एमसीए, बीसीए, बी.टेक कंप्यूटर साइंस, डिप्लोमा कंप्यूटर साइस के विद्यार्थियों का चयन किया गया है, इनमें छात्र जतिन कनौजिया, आशीष राजपूत, ऋतेष यादव, दीपक शर्मा, गौरव गर्ग, हिमांशु पुंढीर, विष्णु चौधरी, मोहित शर्मा छात्रा रिषिका पाठक, प्रियंका मंडल हैं। विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने चयनित छात्र-छात्राओं को उनके प्लेसमेंट पर बधाई देते हुए कहा कि अपने ज्ञान और कौशल से नियोक्ता कंपनी के विकास में अपना सारा श्रम समर्पित करें। कंपनी की प्रगति ही आपके यश में वृद्धि करेगी। संस्कृति विश्वविद्यालय की कौशल और नवाचार से ओतप्रोत शिक्षा का ही यह प्रभाव है कि विवि के विद्यार्थियों को नामी-गिरामी कंपनियों ने हाथों-हात लिया। इस सत्र में अभी तक 90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को विप्रो, जस्ट डायल, वियोस्को मोल्डिंग प्रा.लि., पे मी इंडिया, आईडीएस इन्फोटेक, मोबिलाइट टेक्नोलॉजी, विक्टोरा टूल्स प्रा.लि., जारो ग्रुप, एक्रो लैब, ऑप्ट्रा ऑटोमेशन लि., जीबाक्सज, टीवाईएम से, विकास ग्रुप, मैजिक पिन, ई विजन टेक्नोसर्व, शिवानी लॉक्स, एसकेएच कृष्णा, हिंदुस्तान रिक्यूटर्स में नौकरी मिली है।

★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि के छात्रों द्वारा बनाई गई काऊडंग मशीन का अवलोकन करते विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता और साथ में हैं विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा।

गोबर से मशीन बनाएगी ईकोफ्रेंडली ईंधन

संस्कृति विवि के छात्रों ने बनाई उपयोगी मशीन

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय बी.टेक. के छात्र चंद्रपाल और रहीस पटेल द्वारा एक ऐसी ईको फ्रेंडली मशीन का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा गोबर के लट्ठे बनाए जा सकते हैं। ये लट्ठे ईंधन के लिए कहीं भी प्रयोग किए जा सकते हैं। इनसे न तो प्रदूषण होगा न ही कोई विशेष खर्चा। छात्रों के इस अविष्कार पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि देश को आत्मनिर्भर बनाने में विद्यार्थियों के द्वारा किया जा रहा छोटे से छोटा योगदान भी बड़े महत्व को दर्शाता है। संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू ने जानकारी देते हुए बताया कि इस मशीन का उद्देश्य प्राकृतिक लकड़ी के प्रयोग को कम करना तो है ही जिससे वनों की रक्षा हो सके, साथ ही वातावरण की सुरक्षा करना भी है, ताकि कम से कम प्रदूषण फैले। मशीन द्वारा गाय के गोबर से ऐसे ब्लाग बनाए जा सकते हैं जिनको लकड़ी की जगह आसानी से प्रयोग किया जा सकता है। इनके प्रयोग से धुआं भी बहुत कम निकलता है। भट्टी और औद्योगिक बॉयलर चलाने के लिए इस गाय के गोबर के लॉग पर्यावरण के अनुकूल होते हैं जो लकड़ी की तुलना में कम धुआं पैदा करते हैं। अंतिम संस्कार में भी इन ब्लाग का प्रयोग किया जा सकता है। यह मशीन कॉम्पैक्ट, हल्की, प्रभावी, शक्तिशाली और सबसे आश्चर्यजनक महत्वपूर्ण विशेषता है वह इसका डिजाइन, जो बहुत सरल है। यह मशीन बिजली की बहुत कम खपत करती है। यह आसानी से कुशलतापूर्वक 1.4 मीटर लॉग का उत्पादन कर सकता है। मशीन छात्रों ने इंजीनिरिंग विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर शिवम अग्रवाल की देखरेख में किया है। उमशीन का लोकार्पण करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने कहा कि हो सकता है कि हमारे देश के विद्यार्थी आत्मनिर्भरता की दिशा में धीमी गति से आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन वे ठोस कदम उठा रहे हैं। आगे आने वाले समय में धीरे-धीरे हमारे देश में भी शोध के लिए उच्चस्तरीय साधन और प्रयोगशालाएं उपलब्ध होंगी तो ये बच्चे कमाल करेंगे ऐसा विश्वास है। संस्कृति विश्वविद्यालय लगातार उस मार्ग का अनुसरण करेगा जो हमारे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिखाया गया है। हमें उम्मीद है कि संस्कृति विवि के छात्र भविष्य में भी अनेक उपयोगी मशीनों का अविष्कार करने में सफल होंगे। इस मौके पर विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने छात्र चंद्रपाल और रहीस पटेल को उनके इस अविष्कार के लिए बधाईयां दीं।

★ ★ ★ ★

संस्कृति स्कूल आफ मेडिकल एंड एलाइड साइंसेज के फार्मेसी विभाग की टीम लोगों का परीक्षण करती हुई और सामन्य जानकारियां देती हुई।

संस्कृति विवि के फिजियोथैरेपी विभाग ने मास्क के प्रभाव का किया सर्वे

मथुरा। विश्वव्यापी महामारी कोरोना ने अपने देश में भी कोहराम मचाना शुरू कर दिया है। सरकारी हिदायतों के बावजूद इसके प्रसार को रोक पाना मुश्किल नजर आ रहा है। ऐसे में कोरोना से बचाव के लिए अपनाए जा रहे साधन लोगों के लिए कहीं कोई बड़ी समस्या तो नहीं बनने जा रहे, इसका पता लगाना भी जरूरी हो गया है। संस्कृति स्कूल आफ मेडिकल एंड एलाइड साइंसेज के फिजियोथ्रैपी विभाग ने इस दिशा में काम शुरू कर दिया है। संस्कृति फार्मेसी स्कूल द्वारा इन दिनों इस्तेमाल किए जा रहे मास्क के दुष्प्रभावों को जानने के लिए व्यापक सर्वे शुरू किया गया है। संस्कृति स्कूल आफ मेडिकल एंड एलाइड साइंसेज के फार्मेसी विभाग की सहायक प्रोफेसर डा. प्रेक्षा शर्मा और डा. ख्याति वार्ष्णेय ने बताया कि उन्होंने लगभग 100 लोगों का परीक्षण किया जो लंबे समय से मास्क का प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि सर्वे में सामने आया है कि कोविड-19 से जूझते हुए उन्हें मास्क के कारण पर्याप्त आक्सीजन नहीं मिल पाती जिसके कारण सांस लेने के अलावा ह्रदय संबंधी, मांसपेशियों तथा मानसिक विकारों का भी सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि इस सर्वे के दौरान हमने विभिन्न विकारों से ग्रस्त लोगों को फिजियोथैरेपी के वे उपाय भी बताए जिनका पालन करके वे इन विकारों से मुक्ति पा सकते हैं। डा. प्रेक्षा शर्मा ने बताया कि बहुत सी समस्याएं भौतिक चिकित्सा (फिजियोथैरेपी) से दूर की जा सकती हैं। ऐसा करने से दवाओं के प्रयोग से बचा जा सकता है। अगर किसी का दर्द किसी एक्सरसाइज से दूर हो सकता है तो पेन किलर लेने से बचा जा सकता है, जिसके अनेक दुष्प्रभाव होते हैं। उन्होंने बताया कि सर्वे का यह कार्य संस्कृति स्कूल आफ मेडिकल एंड एलाइड साइंसेज के फार्मेसी विभाग द्वारा जारी रखा जाएगा। इस सर्वे से अनेक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आएंगे और अनेक समस्याओं के समाधान का आसान रास्ता निकलेगा। ★ ★ ★ ★

संस्कृति इंजीनियरिंग स्कूल की कार्यशाला में ऐंटी मिसाइल एंड सर्वेलांस रोबोट का निरीक्षण करते हुए विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता। साथ में हैं विवि के कुलपति डा.राणा सिंह।

संस्कृति विवि के छात्रों ने बनाया आटोनोमस ऐंटी मिसाइल रोबोट

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों का नवोन्मेष का अभियान जारी है। लंबे समय से जिन प्रोजेक्ट को लेकर विवि के छात्र प्रयासरत रहे वे अब अपने अंतिम चरण में पहुंच रहे हैं। लगातार जनउपयोगी उपकरण बनाकर विद्यार्थियों ने अपने कौशल और शिक्षा का प्रदर्शन किया है। इसी क्रम में संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के छात्रों ने एक ऐसा रोबोट बनाया है जो ऐंटी मिसाइल एंड सर्वेलांस का काम करेगा। यह सेना के लिए बड़े काम का है। संस्कृति इंजीनियरिंग स्कूल के विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू ने जानकारी देते हुए बताया है कि इंजीनियरिंग विभाग की संकाय सदस्य शिखा पाराशर की देखरेख में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्र राजकुमार, चेतराम, हरीओम, दीपक, पुष्पेंद्र बाबू, रघुबीर सिंह यादव, नरेश, अशोक, लोकेंद्र राघव, सागर शर्मा ने कठिन परिश्रम और लगन से उन्नत तकनीकियों का प्रयोग करते हुए ऐंटी मिसाइल एंड सर्विलांस रोबोट विकसित किया है। यह रोबोट संस्कृति विवि के मैकेनिकल विभाग की कार्यशाला में ही छात्रों ने विकसित किया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान हालातों में सेना अनेक खतरों से जूझ रही है। आक्रमण का खतरा हर समय बना रहता है। अपनी सेना को नुकसान से बचाने के लिए ही विद्यार्थियों ने इस आटोनामस ऐंटी मिसाइल एंड सर्वेलांस रोबोट को बनाने का

विचार किया। ये रोबोट सीमा सुरक्षा और रक्षा के उद्देश्यों के लिए उपयोगी है। रोबोट की प्रोग्रामिंग इस तरह से की गई है कि वह किसी भी लक्ष्य का पता लगाकर स्वचालित तरीके से उसे शूट कर सके। इसके विकास में जीएसएम, जीपीएस प्रणाली, कैमरा और लाइव ट्रैकिंग की सुविधाओं को शामिल किया गया है। इसके अलावा निगरानी करने के लिए कई अन्य सेंसर सिस्टम लगाए गए हैं। यह रोबोट स्वंयं लक्ष्य को खोजकर उसे नष्ट करने की क्षणता रखता है। इसके द्वारा बेहतर तरीके से निगरानी का काम भी किया जाता है। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए रोबोट का निरीक्षण कर संस्कृति विवि के चेयरमैन सचिन गुप्ता ने विद्यार्थियों का यह प्रयास देश को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम साबित होगा। उन्होंने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे अपने लक्ष्य में निरंतर कामयाब हों, ऐसा ही प्रयास होना चाहिए।

★ ★ ★ ★ ★ ★

कौशल दिवस पर संस्कृति विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के शैक्षिक स्टाफ और अधिकारियों को संबोधित करते कुलपति डा. राणा सिंह। साथ में हैं संस्कृति इंजीनियरिंग स्कूल के विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू।

संस्कृति विश्वविद्यालय कौशल विकास के लिए उठा रहा ठोस कदम

मथुरा। कौशल दिवस पर संस्कृति विश्वविद्यालय के अधिकारियों, फैकल्टीज की हुई एक महत्वपूर्ण बैठक में वक्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्किल डवलपमेंट के संदेश को पूरी तरह से साकार करने का संकल्प लिया।

वक्ताओं ने कहा कि देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में विद्यार्थियों का कौशल विकास किया जाना परम आवश्यक है। संस्कृति विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय शिक्षा, ज्ञान और कौशल में दक्ष करने हेतु लगातार कदम उठाए जा रहे हैं।

बैठक में संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के डीन डा. सुरेश कासवान ने बताया कि विद्यार्थियों के कौशल विकास को लेकर संस्कृति विवि किस तरह से गंभीर है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि विवि ने बड़ा इन्वेस्ट कर अपग्रेड नाम की एक विख्यात कंपनी से एमओयू साइन कर विद्यार्थियों को अत्याधुनिक शिक्षा, प्लेसमेंट और प्रशिक्षण का मौका उपलब्ध कराया है। विद्यार्थी संस्कृति विवि से इंजीनियरिंग की विशेष पाठ्यक्रम आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी एंड मशीन लर्निंग में बी.टेक. की डिग्री हासिल कर सकेंगे।

इस कंपनी के माध्यम से शिक्षण के दौरान ही विद्यार्थियों को विश्वविख्यात कंपनियों में रोजगार के दस अवसर प्राप्त हो जाएंगे। कंपनी द्वारा विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा और कौशल विकास के अलावा रिज्यूम मेकिंग तक में विश्वस्तरीय सहयोग मिलेगा। संस्कृति विवि में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए यह एक सुनहरे मौके की तरह साबित होगा।

विभिन्न विषय संबंधी विद्यार्थियों के लिए भी एआई एंड मशीन लर्निंग कोर्स एक अतिरिक्त विशेषज्ञता दिलाएगा।

बैठक में विवि के कुलपति डा.राणा सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए स्वयं विद्यार्थियों और शिक्षण संस्थानों द्वारा निरंतर प्रयास और श्रम करना चाहिए। हम गर्व से कह सकते हैं कि संस्कृति विवि द्वारा इस दिशा में सजगता से कदम उठाए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा विश्व की वर्तमान मांग के अनुसार और विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए विवि में शुरू हुए महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम एआई एंड एमएल का जिक्र किया।

उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कंप्यूटर साइंस का एक हिस्सा है, जिसके तहत इंटेलीजेंट मशीन तैयार की जाती है, जो मनुष्यों की तरह प्रतिक्रया करती है और काम भी।

मशीन लर्निंग को भी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का एक हिस्सा माना गया है। बैठक में संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू के अलावा अन्य शिक्षकगण भी मौजूद रहे।

★ ★ ★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि के छात्रों द्वारा बनाया गया आटोनामस रोबोट, साथ में कुलाधिपति सचिन गुप्ता एवं छात्र और विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अधिकारी।

संस्कृति के छात्रों ने बनाया आटोनॉमस रोबोट, करेगा कई काम

मथुरा। नए अविष्कारों की दिशा में संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों ने लगातार प्रयासों के बाद एक आटोनॉमस रोबोट का निर्माण कर दिखाया है।

विश्वविद्यालय की वर्कशाप में पूरी तरह से विकसित किया गया यह रोबोट आगंतुकों का स्वागत करने और उनके शारीरिक तापमान को बताने के अलावा अन्य बहुत से काम करने में समर्थ है। संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के मैकेनिकल विभाग के बी.टेक. के छात्रों ने विभाग की संकाय सदस्य सुश्री शिखा पाराशर के मार्गदर्शन में इस रोबोट का निर्माण किया है।

सुश्री शिखा पाराशर ने बताया कि रोबोट मैकेनिकल विभाग की वर्कशॉप में ही पूरी तरह से बनाया और विकसित किया गया है। यह रोबोट आगंतुकों का सिर हिलाकर अभिवादन करने, हाथ मिलाने में पूरी तरह समर्थ है।

इसके अतिरिक्त मिलने वाले के शारीरिक तापमान, पर्यावरण से नमूनों को एकत्र करने, आडियो प्लेबैक के माध्यम से गति का पता लगाने, एलसीडी पैनल पर तापमान, आद्रता और हानिकारक गैसों पता लगाने और बताने में समर्थ है। इतना ही नहीं गैस के रिसाव को पता लगाकर अलार्म के माध्यम से चेतावनी देने का भी काम कर सकता है। बी.टेक. मैकेनिकल के छात्र अंश मिश्रा, आकाश कुमार, आशीष यादव, गोविंद सिंह और योगेश गौतम ने लगातार परिश्रम कर इस रोबोट को तैयार किया है।

अपने ज्ञान और कौशल से छात्रों ने पूर्ण समर्पण के साथ इसको बनाकर इंजीनिरिंग के कमाल का प्रदर्शन किया है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने रोबोट का निरीक्षण कर छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि आप लोगों का छोटा सा काम भी देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित होगा।

आप जुटे रहिए एक दिन ऐसा आएगा कि भारत के युवा नई तकनीकियों को जन्म देंगे, जिससे देश को विश्व स्तर पर पहचान मिलेगी।

इस मौके पर छात्र अंश मिश्रा, आकाश कुमार के अतिरिक्त विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, स्कूल आफ इंजीनियरिंग के डीन सुरेश कासवान, विभागाध्यक्ष सेमी विंसेंट बालू, संकाय सदस्य शिवम अग्रवाल भी मौजूद रहे।

★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि के 25 छात्रों को एसकेएच मैटल्स में मिली नौकरी

मथुरा। आन लाइन हुए कैंपस प्लेसमेंट के तहत संस्कृति विश्वविद्यालय के पॉलीटेक्नीक के डिप्लोमा मैकेनिकल इंजीनियरिंग (प्रोडक्शन) के 25 छात्रों को मानेसर हरियाणा स्थित एसकेएच मैटल्स लि. द्वारा लंबी चयन प्रक्रिया के बाद अपनी कंपनी में नौकरी दी गई है।

विवि प्रबंधन ने इस चयन पर सभी छात्रों को बधाई दी है। कंपनी के एचआर विभाग के एक्सिक्यूटिव विनोद कुमार ने बताया कि एसकेएच की शुरुआत 2006 में हुई थी जब कृष्णा ग्रुप ने मौजूदा मेटल आटो-कंपोनेंट निर्माता का अधिग्रहण किया और इसका नाम बदलकर एकेएच मेटल्स लिमिटेड कर दिया। एसकेएच मेटल्स, एसकेएच और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड का एक संयुक्त उद्यम है।

एसकेएच मेटल्स को फ्रंट सस्पेंशन, आर्म सस्पेंशन, मेटल फ्यूल टैंक, एक्सल हाउजिंग, स्टैम्प्ड और वेल्डेड असंबली जैसे घटकों की आपूर्ति करके मारुति सुजुकी की शानदार विकास यात्रा में एक भागीदार होने पर गर्व है। उन्होंने बताया कि संस्कृति विवि के छात्रों ने आन लाइन व लिखित परीक्षा में अपनी पूर्ण दक्षता का परिचय दिया। चयनित छात्र कंपनी के मानकों और विषय संबंधी कौशल में पूरी तरह से खरे उतरे हैं, जिसके कारण कंपनी ने इनका चयन किया है।

कंपनी में रोजगार के लिए चयनित होने वाले संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों में ओमप्रकाश, हरेंद्र सिंह, लाखन सिंह, नरेंद्र कुमार, पवन कुमार, मोहित गुर्जर, अंकुश, विष्णु सिंह, विष्णु, वसीम खान, राजेश रावत, अमन मिश्रा, हर्षित तिवारी, आकाश कुमार, बल्देव तौमर, कपिल यदुवंशी, कृष्ण कौशिक, राहुल , योगेश कुमार, दीपक कुमार, विष्णु चौधरी, पियूष शर्मा, मनिद्र कुमार, मुकेश और मनीष हैं। एसकेएच मेटल्स लिमिटेड कंपनी में नौकरी पाने वाले छात्रों को विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

★ ★ ★ ★ ★

साइबर सुरक्षा और अपराध के बारे में जागरूक होना जरूरी

संस्कृति विवि द्वारा आयोजित वेबिनार में बोले मुख्य वक्ता

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के फोरेंसिक साइंस विभाग द्वारा आयोजित 'एवेयरनैस आन साइबर सिक्योरिटी एंड साइबर क्राइम', विषयक वेबिनार में मुख्य वक्ता सुप्रजा टेक्नोलॉजी के सीईओ संतोष चालूवाड़ी ने कहा कि डिजिटल क्रांति के वर्तमान दौर में इस विषय को जानने और समझने की बहुत जरूरत है। विद्यार्थियों के लिए यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां बढ़ती मांग के कारण रोजगार पाने और अपना काम शुरू करने की बड़ी संभावनाएं हैं। मुख्य वक्ता संतोष ने कहा कि मोबाइल फोन का हमारे जीवन में एक बड़ा रोल हो गया है। स्मार्ट फोन हमारे राजदार हैं। मान लीजिए आपका यह फोन खो जाता है तो आप क्या करेंगे। इसको खोजने के लिए जगह-जगह ढूंढेगे। लेकिन आधुनिक तकनीकियों के चलते इसको खोजना आसान है। आपका फोन ही आपको वह तरीका बता सकता है जिसके द्वारा आप अपना खोया हुआ फोन दोबारा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि

मुख्य वक्ता
संतोष चालूवाड़ी

आज आप ऐसी अनेक खबरें सुनते, पढ़ते हैं कि डाटा चोरी हो गया, डाटा चुराने के लिए कंपनियां आपके फोन में छिपी निजी और महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करने के लिए कैसे-कैसे काम कर रही हैं। इसीलिए जागरूक होना जरूरी है कि हम कैसे अपने डाटा की सुरक्षा करें, अपनी महत्वपूर्ण संपत्ति को सुरक्षित रख सकें। उन्होंने सोशल मीडिया अकाउंट्स के पासवर्ड से संबंधित समाज में व्याप्त विभिन्न साइबर अपराधों के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि डेटा का निजीकरण और डेटा चोरी क्या है और कैसे इससे बचा जाय। विषय विशेषज्ञ ने कहा कि विषय कोई भी हो उसका अध्ययन पूरी रुचि के साथ होना चाहिए। जब आप विषय में पूरी रुचि लेते हैं तो विषय को अच्छी तरह से समझ पाते हैं, फिर आपको किसी विषय या सिद्धांत को रटने की आवश्यकता नहीं रहती आप उसको आसानी से याद रख पाते हैं। हो सकता है कि आप नंबरों की दृष्टि से अधिक सफल नहीं हो पाएं, लेकिन आपका विषय ज्ञान आपको सफलता दिलाता ही है। हमारी तरह बहुत सारी कंपनियां प्लेसमेंट के दौरान बच्चों की मार्कशीट में नंबरों के प्रतिशत पर नहीं उनके व्यवहारिक ज्ञान को ज्यादा महत्व देती हैं। किसी बच्चे के नंबर भले ही 60 प्रतिशत हों अगर उसको विषय संबंधी पूरा ज्ञान है तो ऐसा विद्यार्थी हमारे लिए उपयोगी होता है। उन्होंने कहा कि टेक्नोलॉजी के इस युग में हम सभी को यह जानना जरूरी हो गया है कि हम अपने को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं। इससे पूर्व संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के डीन डा. सुरेश कासवान ने मुख्य वक्ता संतोष चालूवाड़ी का परिचय देते हुए वेबिनार में उपस्थित होने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वेबिनार में भाग ले रहे फैकल्टी सदस्य और विद्यार्थियों के लिए आज का यह सत्र हर दृष्टि से उपयोगी रहा है। वेबिनार के अंत में फोरेंसिक साइंस की असिस्टेंट प्रोफेसर अदील सुघरा जैदी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। वेबिनार में डा. लिसा युगल, डा. केके शर्मा के हलावा अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

★ ★ ★

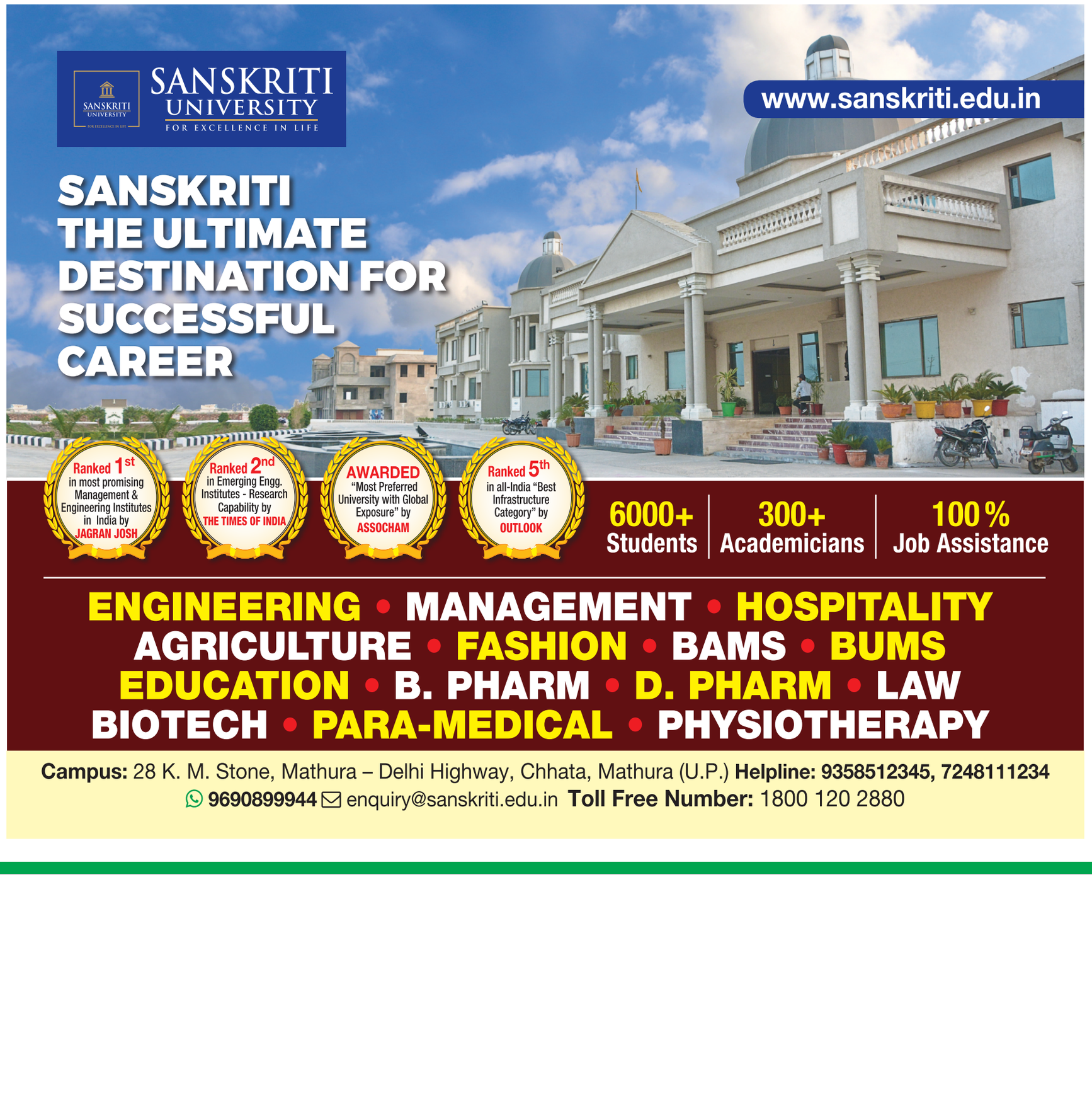

संस्कृति विवि के परिसर में पौधरोपण करते विवि के अधिकारी कर्मचारी।

संस्कृति विवि के परिसर में लगायी गई फलदार, छायादार वृक्षों की पौध

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के परिसर में बरसात से पूर्व हजारों की संख्या में वृक्षारोपण किया गया। इस बार सरकार की मंशा है कि जहां भी लगें, फलदार और छायादार वृक्ष लगाए जाएं। सरकार की इस मंशा के तहत वन विभाग द्वारा सभी विभागों को और अन्य संस्थाओं को इन पौधों का वितरण किया गया है। संस्कृति विवि प्रशासन ने वनविभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए तथा अपनी ओर से मंगाई गई पौध का परिसर में रोपण किया गया। संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रशासनिक विभाग द्वारा मिली जानकारी के अनुसार विश्वविद्यालय परिसर में जिसमें पूर्व से ही बड़ी मात्रा में छायादार, फूलदार वृक्ष लगे हैं, वर्षा से पूर्व इन नई पौधों का रिक्त स्थानों पर बड़ी मात्रा में गड्ढे खोदकर रोपण किया गया। इनमें महुआ, अश्विनी-केला, भरणी-आंवला, कुतिका-गुलर, रोहिणी-जामुन, फाल्गुनी-ढ़ाक, उ. फाल्गुनी-पाकड़, हस्त-रीठा चमेली, चित्रा-बेल, स्वाती-अर्जुन, नीम, अनुराधा-मौलश्री, ज्येष्ठा-चीड़, आम, कदंब आदि के वृक्षों की पौध लगाई गई है। परिसर की चारदीवारी के निकट और बागों के किनारे इन वृक्षों के लिए गड्ढे खोदे गए। पौधरोपण का यह कार्य संस्कृति विवि में रविवार से प्रारंभ हुआ है, जो अभी निरंतर जारी रहेगा। विवि प्रशासन का कहना है कि यह काम सिर्फ पौधरोपण तक ही सीमित नहीं रहेगा, विवि के मालियों को इनके रखरखाव के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं। विवि चाहता है कि लगाई गई हर पौध वृक्ष का रूप धारण करे। पौधरोपण के इस कार्यक्रम में विवि के प्रशासनिक विभाग, एग्रीकल्चर विभाग, एडमीशन सेल के अधिकारियों, कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। ★ ★ ★ ★ ★ ★

संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा बनाए बहुउपयोगी स्टैंड के साथ विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता, विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के डीन सुरेश कासवान, विभागाध्यक्ष विंसेट बालू।

संस्कृति विवि के छात्रों ने बनाया बहु उपयोगी स्टैंड

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों द्वारा एक ऐसा स्टैंड बनाया गया है जो अनेक साइज के लैपटाप और मोबाइल रखने के लिए अत्यंत सुविधाजनक है। इस स्टैंड में एक पुश बटन भी लगाया गया है जिसके द्वारा इसको सुविधानुसार ऊपर नीचे किया जा सकता है। स्कूल आफ इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू ने बताया कि छात्रों द्वारा निर्मित यह स्टैंड सुनने और देखने में भले ही बहुत सामान्य सा लगे लेकिन उपयोग की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि इस स्टैंड को मूर्तरूप देने वाले मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्र रहीस पाल और चंद्रकांत हैं।

वर्तामान दौर में कक्षाएं आनलाइन हो रही हैं। स्पेशल लेक्चर, वेबिनार भी अब आनलाइन ही हैं। ऐसे में विद्यार्थी, फैकल्टी मैंबर लैपटाप और मोबाइल का लंबे समय तक उपयोग करते हैं। हाथ में, टेबल पर, गोदी में रखकर या उपलब्ध साधनों के प्रयोग करते समय विद्यार्थियों और शिक्षकों को कई तरह की समस्यों का सामना करना पड़ रहा है मसलन विद्यार्थी और शिक्षकों को बार-बार अपनी पोजीशन बदलनी पड़ती है, ऊपर नीचे होना पड़ता है, लैपटाप और मोबाइल की स्थिति के अनुरूप खुद को एडजस्ट करना पड़ता है। इन सब परेशानियों का हल छात्रों के द्वारा बनाए गए इस स्टैंड में किया गया है। यह स्टैंड बहुत हल्का, कांपेक्ट और मजबूत है। अब विद्यार्थी या शिक्षक को अपने को एडजस्ट नहीं करना पड़ेगा बल्कि वे अपनी स्थिति के अनुरूप स्टैंड को एडजस्ट कर पाएंगे। इसके अलावा स्टैंड पर किसी भी साइज का लैपटाप, मोबाइल आसानी से फिक्स किया जा सकता है। छात्रों द्वारा बनाए गए इस बहुउपयोगी स्टैंड का अवलोकन करते हुए विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने छात्रों को बधाई दी। विश्वविद्यालय की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने छात्रों के इस निर्माण की सराहना करते हुए उन्हें इस दिशा में निरंतर प्रयास के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर इंजीनियरिंग स्कूल के डीन सुरेश कासवान व विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू भी मौजूद रहे।

★ ★ ★ ★ ★ ★